अनाथालय का बच्चो के समग्र विकास मे योगदान
Contribution of orphange in whole Development of child

20

बच्चो के समग्र विकास मे अनाथालय के योगदान को निम्नलिखित प्रकार से देखा जासकता है।

(1) अनाथालय मे बच्चों को घर-परिवार जैसा प्रेम और सहयोग दिया जाता है जिससे वे अपने आप को समाज मे उपेक्षित अनुभव न करें।

(2) यहाँ बच्चो को सभी सुविधाएँ दी जाती है जिससे वे हीनभावना से ग्रसित नही होते क्योंकि वे अनुभव करते है कि अन्य सामान्य बालकों के समान उनके पास भी सुविधाएं उपलब्ध है।

(3) अनाथालय में खेल के मैदान की भी व्यवस्था की जाती है जिससे बच्चे खेलकूद सके और शारीरिक रूप से हष्ट पुष्ट बन सकें

(4) अनाथालय द्वारा बालकों की शिक्षा का प्रबन्ध किया जाता है और उन्हे शालाओ मे प्रवेश दिलाया जाता है जिससे कि वे पढ़-लिख सके और अपनी आजीविका कमाने के योग्य बन सकें

(5) अनाथालय के प्रबन्धक और शिक्षको एंव कर्मचारियो द्वारा बालको के साथ स्नेहवत व्यवहार करने पर उन्हे घर-परिवार की कमी का अनुभव नही होता और वे समाजिक रूप से विकास पथ पर आगे बढ़ते है।

Scanned with CamScanner

21 (6) अनाथालय मे सभी बच्चे भाई-बहन एवं मित्रो की भाँति रहते है तथा अपने अनुभव को एक दुसरे के साथ बाँटते है। इससे उनमे स्नेह एवं आपसी सहयोग की भावना का विकास होता है।

(7) अनाथालय मे रहकर बच्चे जीवन के संघर्ष मे समायोजन की योग्यता का विकास करते है अर्थात उनमे इस प्रकार की क्षमता विकसित होती है कि वह जीवन की जटिल परिस्थितियो मे स्वयं को समायोजित कर सके

(8) अनाथालय मे बच्चे स्वयं अपने कार्य करते है इससे उनमे आत्मविश्वास बढ़ता है।

इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि अनाथालय अनाथ बच्चो के सर्वांगीण विकास का प्रमुख आधार है। अनाथ बच्चो को यदि अनाथालय मे आश्रय न मिले तो बिना किसी देखरेख के उनके विकास अवरुद्ध हो जाता है। कुछ अनाथ बच्चे तो गलत संगत मे पड़कर अपराधी तक बन जाते है जबकि अनाथालय मे उनको विकास के पुर्ण अवसर प्रदान किये जाते है। अतः अनाथ बच्चो के सर्वांगीण विकास मे अनाथालय का प्रमुख योगदान है।

Scanned with CamScanner

आवासीय विद्यालयों का बच्चों के समग्र विकास में योगदान
(Contribution of Residential School in whole development of child)

22

आवासीय विद्यालयों में शिक्षा के साथ-साथ बच्चों के रहने की भी व्यवस्था की जाती है। आवासीय विद्यालयों में रहना ग्रामीण क्षेत्र के बालकों के लिए सुविधाजनक होता है क्योंकि उन्हें गाँव से नगर तक जाने में जो कठिनाई होती है, उससे वो बच जाते हैं। आवासीय विद्यालयों का उन छात्रों के लिए भी महत्व है जिनके अभिभावकों का प्रायः स्थानान्तरण होता रहता है। आवासीय विद्यालयों में बालकों में समय की पाबन्दी, सामाजिकता, सामाजिकता तथा परस्पर सहयोग की भावना का विकास होता है। इसलिए आवासीय विद्यालयों की स्थापना ऐसे स्थानों पर की जाय जहाँ का वातावरण शान्त, शुद्ध, तथा स्वास्थ्यवर्द्धक हो। विद्यालय की इमारत एक मंजिल हो तो उत्तम है। कक्षा इतने बड़े हों जिनमें दो या तीन छात्र मिलकर रह सके। विद्यालय में एक सामान्य कक्ष भी होना चाहिए। इस प्रकार का आवासीय विद्यालय ही बच्चों के सर्वांगीण विकास में सार्थक योगदान दे सकता है। आवासीय विद्यालयों में बालक अपने परिजनों से दूर रहकर स्वयं ही अपना कार्य करना सीख जाते हैं। शिक्षक के निर्देशन में वे अपने स्वास्थ्य तथा मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य पर पूर्ण ध्यान देते हैं, साथ ही उनका शैक्षिक, चारित्रिक एवं नैतिक विकास होता है। अर्थात बालकों के सर्वांगीण या समग्र विकास का मार्ग प्रशस्त होता है। आवासीय विद्यालयों की इसी उपयोगिता के वजह से नवोदय विद्यालय की स्थापना की गई।

He who begins many things finishes nothing. ❖

Th Fr Sa Su Mo Tu We Th Fr Sa Su Mo Tu We Th Fr Sa Su Mo Tu We Th Fr Sa Su Mo Tu We Th Fr Sa
1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 •
April

Scanned with CamScanner

बच्चों के समग्र विकास में आँगनबाड़ी का योगदान
(Contribution of Anganvadi in whole Devlopment of child)

समन्वित बाल-विकास या आँगनबाड़ी का प्रशिक्षण सैण्डविच प्रारूप पर आधारित है। आँगनबाड़ी परिवर्ती शिक्षा की शुरुआत है। अतः इस कार्यक्रम की उन्नति, विस्तार एवं मजबूती पर जोर देना चाहिए। यह कार्यक्रम परवर्ती शिक्षा के विकास में पूर्व प्राथमिक शिक्षा की भूमिका निभाता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 ICDS के विकास के लिये निम्नलिखित कार्यक्रमों की सिफारिश करती है —

(1) प्रत्येक आँगनबाड़ी कार्यकर्ता को प्रशिक्षण केन्द्र में कम से कम 25 आँगनबाड़ी केन्द्रों को चलाने की जिम्मेदारी दी जानी चाहिए ताकि व्यावहारिक अनुभव हो सके।

(2) प्रशिक्षणार्थी को कम से कम एक माह के लिए आँगनबाड़ी केन्द्र में रखना चाहिये ताकि व्यवहारिक प्रशिक्षण दिया जा सके।

(3) प्रशिक्षक एवं प्रशिक्षणार्थी के उपयोग के लिये प्रशिक्षण सामग्री भी विकसित होनी चाहिये।

(4) बालकों को शिक्षण सामग्री चित्र, पोस्टर आँगनबाड़ी केन्द्र पर उपलब्ध होना चाहिए।

(5) प्रशिक्षक, पर्यवेक्षक एवं सी० डी० पी० ओ० को पूर्व-प्राथमिक शैक्षणिक अवयव का पुनश्चर्या का प्रशिक्षण देना चाहिए क्षेत्रीय प्रशिक्षण भी होना चाहिये ताकि सेवा से पूर्व एवं स्तर पर कार्य क्षेत्र मे सर्मूथ हो सके।

(6) सी० डी० पी० ओ० कार्यालय संसाधन केन्द्र के रूप मे विकसित होना चाहिये यहाँ प्रशिक्षण सामग्री की प्रचुरता होनी चाहिये।

Scanned with CamScanner

24

आँगनवाड़ी केन्द्र का उद्देश्य बच्चो एवं महिलाओ का सर्वांगीण विकास करना है। 0 से 6 वर्ष तक के बच्चो को समुचित पूरक पोषण आहार प्रदान कर स्वास्थ्य की स्थिति मे सुधार कर उनके मनोवैज्ञानिक, शारीरिक एव सामाजिक विकास के लिए उचित आधार प्रदान करना है। इसके साथ ही साथ कमजोर वर्ग की गर्भवती एव शिशुवती महिलाओ को आँगनबाड़ी केन्द्रो से लाभ पहुचाना है

आँगनबाड़ी एवं बालबाड़ी में परिवार एवं शिक्षक की भूमिका (Role of Parents and Teacher in Anganvadi and Balvadi)

बालको के विकास के लिए आँगनबाड़ी एवं बालबाड़ी केन्द्रो का विशेष योगदान रहा है इसमे परिवार तथा शिक्षको की भी भूमिका अहम रही है रूसो ने कहा था की (बालक की शिक्षा मे परिवार का महत्वपूर्ण स्थान है परिवार ही बालक को सर्वोत्तम शिक्षा देता है यह एक ऐसी संस्था है जो मूलरूप मे प्राकृतिक है) प्रसिद्ध शिक्षा विद् फ्रॉबेल के अनुसार (माताएँ आदर्श शिक्षिकाएँ है और घर द्वारा ही दि जानेवाली अनौपचारिक शिक्षा ही सर्वाधिक प्रभावशाली और स्वभाविक है) शिक्षाविद् रेमण्ट के अनुसार (घर ही वह स्थान है जहाँ बालक के वे महान गुण विकसित होते है जिनकी समान्य विशेषता, सहानुभूति है) माता-पिता व परिवार का इतना महत्व होते हुए भी आज की विषम परिस्थितियो मे न तो माता-पिता और परिजनो को इतना समय मिल पाता है कि वे बालक की देखभाल करे और न ही उनको इतनी जानकारी होती है कि वे बालक की देखभाल कर सके।

Scanned with CamScanner

माता-पिता तथा परिजनो के दायित्व — (Responsibilities of Parents and guardians)

आँगनबाड़ी केन्द्र स्थापित करने मे माता-पिता तथा परिजनो के दायित्व निम्नलिखित प्रकार है—

(1) बालक घर से आँगनबाड़ी केन्द्र पर आता है तो उसे घर के समान स्नेहपूर्ण वातावरण दिया जाय ताकि उसे वहाँ पर रुचिपूर्वक रहने का आनन्द अनुभव हो सके। इस हेतु बालक के घर और परिवार की सम्पूर्ण जानकारी प्रवेश के समय ही भली-भाँति ले ली जाय।

(2) बालक बालिकाओं के अभिभावको से निरन्तर मिलते रहें तथा उन्हे आवश्यक मार्गदर्शन देते रहें।

(3) कार्यकर्ता एंव शिक्षको अभिभावको से अच्छा सम्पर्क बनाते हुए आँगनबाड़ी के विकास हेतु सहयोग प्राप्त करते रहे।

(4) केन्द्र विद्यालय स्तर पर बालक-बालिकाओं के अभिभावकों को शिक्षा के नवीन सिद्धान्त एंव क्रियाकलापो से परिचित कराने के लिये अभिभावको सम्मेलन आयोजित करते है

(5) अभिभावक सम्मेलनो मे स्थानीय परिवेश एंव परिस्थिति-यों के अनुरूप बालक-बालिकाओ के स्वास्थ्य, स्वच्छता पौष्टिक भोजन, खेलकूद और सामान्य व्यवहार के सम्बन्धी मे तकनीकी जानकारी देते रहें।

Scanned with CamScanner

आँगनबाड़ी शिक्षक तथा कार्यकर्ताओं के दायित्व

Responsibilities of workers and teachers of anganbadi

आँगनबाड़ी केन्द्र के शिक्षक तथा कार्यकर्ताओं के दायित्व निम्नलिखित

(1) बालक जो आँगनबाड़ी केन्द्र पर आता है तो उसे घर के समान स्नेहपूर्ण वातावरण दिया जाय ताकि उसे वहाँ पर रुचिपूर्वक रहने का आनन्द अनुभव हो सके। इस हेतु बालक के घर और परिवार की सम्पूर्ण जानकारी प्रवेश के समय ही भली-भाँति ले ली जाय।

(2) बालक बालिकाओं के अभिभावकों से निरन्तर मिलते रहें तथा उन्हें आवश्यक मार्गदर्शन देते रहें

(3) कार्यकर्ता एवं शिक्षक अभिभावकों से अच्छा सम्पर्क बनाते हुए आँगनबाड़ी के अभिभावकों विकास हेतु सहयोग प्राप्त करते रहें।

(4) केन्द्र विद्यालय स्तर पर बालक-बालिकाओं के अभिभावकों को शिक्षा के नवीन सिद्धान्त एवं क्रियाकलापों से परिचित कराने के के लिये अभिभावक सम्मेलन आयोजित करते रहें।

(5) अभिभावक सम्मेलनों में स्थानीय परिवेश एवं परिस्थितियों के अनुरूप बालक-बालिकाओं के स्वास्थ्य स्वच्छता, पौष्टिक भोजन, खेलकूद और सामान्य व्यवहार के सम्बन्धी में तकनीकी जानकारी देते रहें